

# संस्कृत भाषा का संक्षिप्त परिचय

संस्कृत , विश्व की सम्भवतः प्राचीनतम भाषा है। इसे ' देवभाषा ' और ' सुरभारती ' भी कहते हैं। संस्कृत विश्व की अनेक भाषाओं की जननी है। संस्कृत में सनातन धर्म के अतिरिक्त बौद्ध एवं जैन धर्म का साहित्य भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है। संस्कृत मात्र धर्म संबंधी साहित्य की ही भाषा नहीं है , अपितु संस्कृत में विज्ञान ( भौतिक, रसायन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिषादि ) विषयों के ग्रन्थों की सूची भी छोटी-मोटी नहीं है।

संस्कृत भाषा जितनी ही पुरातन है, उतनी ही वह अपने को चिर नवीन भी बनाती आई है। विशाल वैदिक वांग्मय संस्कृत काव्य की अमूल्य निधि है। कालिदास, भवभूति, माघ, भास, बाणभट्ट , भर्तृहरि जैसे महान् रचनाकारों की कृतियाँ संस्कृत की उदात्तता का परिचय देती हैं। इनके अलावा बहुत

ऐसे अज्ञात कवि हुए हैं जिन्होंने सामान्य जन की छोटी-छोटी इच्छाओं, सपनों एवं कठिनाइयों को भी स्वर दिया है। संस्कृत के आधुनिक लेखन में यह लोकधारा और मुखर हुई है। यही नहीं संस्कृत वर्तमान जीवन और हमारे संसार को समझने पहचानने के लिये भी एक अच्छा माध्यम बनने की क्षमता रखती है।

आधुनिक भाषा-विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत **हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार** की हिन्द-ईरानी शाखा की हिन्द-आर्य उपशाखा में शामिल है, । अनेक लिपियों में लिखी जाती है, जिनकी प्राचीन लिपियों में 'सरस्वती ( सिन्धु ) ' और ' ब्राह्मी लिपि' एवं आधुनिक लिपियों में 'देवनागरी' प्रमुख है।

किसी भी भाषा के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन **व्याकरण** (ग्रामर) कहलाता है। व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा किसी भाषा का शुद्ध बोलना, शुद्ध पढ़ना और शुद्ध लिखना

आता है। किसी भी भाषा के लिखने, पढ़ने और बोलने के निश्चित नियम होते हैं। भाषा की शुद्धता व सुंदरता को बनाए रखने के लिए इन नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। ये नियम भी व्याकरण के अंतर्गत आते हैं। व्याकरण भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। व्याकरण का दूसरा नाम "शब्दानुशासन" भी है। वह शब्दसंबंधी अनुशासन करता है - बतलाता है कि किसी शब्द का किस तरह प्रयोग करना चाहिए। भाषा में शब्दों की प्रवृत्ति अपनी ही रहती है; व्याकरण के कहने से भाषा में शब्द नहीं चलते। परंतु भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार व्याकरण शब्दप्रयोग का निर्देश करता है। यह भाषा पर शासन नहीं करता, उसकी स्थितिप्रवृत्ति के अनुसार लोकशिक्षण करता है। व्याकरण का महत्व यह श्लोक भली-भाँति प्रतिपादित करता है

:

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र  
व्याकरणम्।  
स्वजनो श्वजनो माऽभूत्सकलं शकलं  
सकृत्शकृत्॥

**अर्थ :** " पुत्र! यदि तुम बहुत विद्वान नहीं बन पाते हो तो भी व्याकरण (अवश्य) पढ़ो ताकि 'स्वजन' 'श्वजन' (कुत्ता) न बने और 'सकल' (सम्पूर्ण) 'शकल' (टूटा हुआ) न बने तथा 'सकृत्' (किसी समय) 'शकृत्' (गोबर का घूरा) न बन जाय। "

## संस्कृत भाषा का जनक किसे कहा जाता है?

पाणिनि (५०० ई पू) संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुए हैं। इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गांधार में हुआ था। इनके व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का

योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रंथ नहीं है। इसमें प्रकारांतर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है। इनका जीवनकाल 520 – 460 ईसा पूर्व माना जाता है ।

एक शताब्दी से भी पहले प्रसिद्ध जर्मन भारतविद मैक्स मूलर (१८२३-१९००) ने अपने साइंस आफ् थाट में कहा -

"मैं निर्विकतापूर्वक कह सकता हूँ कि अंग्रेज़ी या लैटिन या ग्रीक में ऐसी संकल्पनाएँ नगण्य हैं जिन्हें संस्कृत धातुओं से व्युत्पन्न शब्दों से अभिव्यक्त न किया जा सके । इसके विपरीत मेरा विश्वास है कि 2,50,000 शब्द सम्मिलित माने जाने वाले अंग्रेज़ी शब्दकोश की सम्पूर्ण सम्पदा के स्पष्टीकरण हेतु वांछित धातुओं की संख्या, उचित सीमाओं में न्यूनीकृत पाणिनीय धातुओं से भी कम है । .... अंग्रेज़ी में ऐसा कोई वाक्य नहीं जिसके प्रत्येक शब्द का 800 धातुओं से एवं प्रत्येक विचार का

पाणिनि द्वारा प्रदत्त सामग्री के सावधानीपूर्वक  
वेश्लेषण के बाद अविशष्ट 121 मौलिक  
संकल्पनाओं से सम्बन्ध निकाला न जा सके ।"

*The M L B D News letter ( A monthly of  
indological bibliography) in April 1993, में  
महर्षि पाणिनि को first softwear man  
without hardware घोषित किया है। जिसका  
मुख्य शीर्षक था " Sanskrit software for  
future hardware "*

जिसमे बताया गया " प्राकृतिक भाषाओं को  
कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाने के तीन  
दशक की कोशिश करने के बाद, वैज्ञानिकों को  
एहसास हुआ कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में भी हम  
2600 साल पहले ही पराजित हो चुके हैं। हालाँकि  
उस समय इस तथ्य किस प्रकार और कहाँ  
उपयोग करते थे यह तो नहीं कह सकते, पर आज  
भी दुनिया भर में कंप्यूटर वैज्ञानिक मानते हैं कि

आधुनिक समय में संस्कृत व्याकरण सभी कंप्यूटर की समस्याओं को हल करने में सक्षम है।

व्याकरण के इस महनीय ग्रन्थ में पाणिनि ने विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के 4000 सूत्र बहुत ही वैज्ञानिक और तर्कसिद्ध ढंग से संगृहीत हैं।

**NASA के वैज्ञानिक Mr.Rick Briggs** ने अमेरिका में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पाणिनी व्याकरण के बीच की शृंखला खोज की। प्राकृतिक भाषाओं को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाना बहुत मुस्किल कार्य था जब तक कि Mr.Rick Briggs. द्वारा संस्कृत के उपयोग की खोज न गयी। उसके बाद एक प्रोजेक्ट पर कई देशों के साथ करोड़ों डॉलर खर्च किये गये।

महर्षि पाणिनि शिव जी बड़े भक्त थे और उनकी कृपा से उन्हें महेश्वर सूत्र से ज्ञात हुआ जब शिव जी संध्या तांडव के समय उनके डमरू से निकली हुई ध्वनि से उन्होंने संस्कृत में वर्तिका नियम की

रचना की थी। पाणिनीय व्याकरण की महत्ता पर विद्वानों के विचार

- "पाणिनीय व्याकरण मानवीय मष्तिष्क की सबसे बड़ी रचनाओं में से एक है" (लेनिन ग्राड के प्रोफेसर टी. शेरवात्सकी)।
- "पाणिनीय व्याकरण की शैली अतिशय-प्रतिभापूर्ण है और इसके नियम अत्यन्त सतर्कता से बनाये गये हैं" (कोल ब्रुक)।
- "संसार के व्याकरणों में पाणिनीय व्याकरण सर्वशिरोमणि है... यह मानवीय मष्तिष्क का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अविष्कार है" (सर डब्ल्यू. डब्ल्यू. हण्डर)।
- "पाणिनीय व्याकरण उस मानव-मष्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम नमूना है जिसे किसी दूसरे देश ने आज तक सामने नहीं रखा"। (प्रो. मोनियर विलियम्स)

॥ जयतु संस्कृतम् । जयतु भारतम्



# इस समय संस्कृत भाषा का क्या फायदा है?

संस्कृत भाषा मे दो मुख्य बिन्दु होते है - विसर्ग (:) और अनुस्वार (म)! संस्कृत के अधिकांश पुल्लिंग शब्द विसरंगात् होते है जैसे कि छात्रः , खगः इत्यादि । आप इन शब्दों को मुख से एक बार उच्चारण कर के देखिए आप जान जाएंगे इन शब्दों की खासियत यह है कि इनके पीछे विसर्ग लगने से इनके उच्चारण के दौरान श्वास बाहर निकलता है, ठीक वैसे जैसे कि कपालभाति प्राणायाम में श्वास बाहर आता है तो जितनी बार विसर्ग वाले शब्दों का उच्चारण होता है , अपने आप सहज रूप से कपालभाति प्राणायाम होता जाता है अनायास ही उससे मिलने वाले लाभ भी प्राप्त हो जाते है ।

वही संस्कृत के अधिकतर नपुंसक लिंग के शब्द अनुस्वार की श्रेणी में आते है अगजम्पल के तौर

पर वनम ,पुस्तकं, मन्दिरम, भवंम, आदि अब जरा इन शब्दों को उच्चारण पर गौर करे ,उच्चारण के अंत मे आपके मुख से सहज ही भवरे के गुंजन की आवाज निकलेगी जो भ्रामरी प्राणायाम की प्रक्रिया है तो अब जितनी बार संस्कृत के नपुंसक लिंग के अनुस्वारांत शब्द बोले जाते है उतनी ही बार स्वतः ही भ्रामरी प्राणायाम के लाभ प्राप्त हो जाते है ।

संस्कृत के अधिकांश वाक्यो में अनुस्वार और विसर्ग दोनो ही प्रयोग होते है । अब यदि आम बोल चाल की भाषा बन जाये तो बातचीत करते हुए प्राणायाम स्वतः ही करते रहेंगे और स्वास्थ्य लाभ भी मिलते रहेंगे । इशालिये जहाँ तक मेरा अपना तर्क है हमारे ऋषि मुनियों ने एक पंथ दो काज के पथ पर चलते हुए देव वाणी संस्कृत अपनायी ।

**संस्कृत सभी भाषाओं की  
उदगम है, इसके क्या साक्ष्य  
हैं ?**

भारत की अकेली विशिष्ट भाषा संस्कृत है। जिसके पास शब्दों का सबसे बड़ा भण्डार है। दुनिया में बोली जाने वाली भाषा जिसको हम अंग्रेजी कहते हैं, रसियन, जर्मन, फ्रेंच, डच, स्पेनिश, डेनिस या चाइनीज। इन सब भाषाओं से हजारों गुणा ज्यादा शब्द संस्कृत भाषा में हैं। महर्षि पाणिनी से लेकर आज तक यदि संस्कृत के उपयोग किये गये शब्दों की गणना की जाए, कि कितने शब्द भाषा के स्तर पर उपयोग किये हैं। 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्दों का उपयोग अब तक हो चुका है। संस्कृत भाषा बहुता समृद्धशाली है। जब भाषा समृद्ध होती है तो साहित्य भी समृद्ध होता है। संस्कृत भाषा में जितना साहित्य लिखा गया है पूरी दुनिया में शायद ही किसी भाषा में लिखा गया है।

**संस्कृत भाषा के पतन का  
क्या कारण है? क्या पुनः  
उदय संभव है?**

संस्कृत भाषा के पतन के कई कारण हैं जिनमें से प्रमुख ये हैं।

१- मुस्लिम शासन के बाद संस्कृत राजकाज की भाषा नहीं रह गयी और शासकों द्वारा संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन नहीं दिया गया जिससे इसकी उपयोगिता बहुत सीमित रह गयी।

२- मुस्लिम आक्रमणों के दौरान पुस्तकालयों और विश्वविद्यालयों के विनाश के कारण अधिकांश संस्कृत ग्रन्थ नष्ट हो गये। केवल वे ग्रन्थ ही बचे जो पुरोहितों, वैद्यों व ज्योतिषियों जैसे पेशेवर लोगों की जीविका से सम्बन्धित होने के कारण इन लोगों के घर में सुरक्षित रहे। अतः मध्यकाल में संस्कृत की छवि हिन्दुओं की धार्मिक भाषा की बन गयी। यह भुला दिया गया कि संस्कृत में प्रचूर धर्मनिरपेक्ष साहित्य भी उपलब्ध है।

३- लॉर्ड मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षापद्धति में सभी भारतीय भाषाओं तथा भारत में प्रचलित शास्त्रीय भाषाओं की इस तरह उपेक्षा की गयी कि उन्हें

सीखने की उपयोगिता नहीं रह गयी। प्रचलित भाषाओं का समाज में व्यवहार होता था इस नाते उनका प्रचलन बना रहा पर संस्कृत सीखने की अब कोई आवश्यकता नहीं थी अतः उसका प्रचलन कम होता गया।

४- उत्तर भारत में उर्दू के मुकाबले में हिन्दी को यह कहकर खड़ा किया गया कि यह हिन्दुओं की भाषा उसी प्रकार है जिस प्रकार मुसलमानों की भाषा उर्दू है। इसका परिणाम यह हुआ कि अपनी धार्मिक भाषा के रूप में भी संस्कृत सीखने का उत्साह हिन्दुओं में कम हो गया। अन्य क्षेत्रों में भी वहाँ की क्षेत्रीय पहचान पर जोर देने से लोग संस्कृत की अपेक्षा स्थानीय भाषा को महत्व देने लगे और यही सुविधाजनक भी था।

५- स्वतन्त्रता के समय तक देश में ऐसे नेता हावी हो चुके थे जो संस्कृत की प्राचीन परम्परा से कटे हुए थे और इस नाते उन्हें यह विश्वास नहीं था कि संस्कृत को पुनः जीवित किया जा सकता है। इन

नेताओं के दृष्टिकोण ने भी संस्कृत के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

# संस्कृत को देवभाषा क्यों कहा गया है? यह भाषा अन्य भाषाओं से किन मानकों पर बेहतर है?

रूसी, जर्मन, जापानी, अमेरिकी सक्रिय रूप से हमारी पवित्र पुस्तकों से नई चीजों पर शोध कर रहे हैं और उन्हें वापस दुनिया के सामने अपने नाम से रख रहे हैं। दुनिया के कई देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत और वेद के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए जुटे हैं। हमारे देश में तो इंग्लिश बोलना शान की बात मानी जाती है। इंग्लिश नहीं आने पर लोग आत्मग्लानि अनुभव करते हैं जिस कारण जगह-जगह इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स चल रहे हैं।

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है तथा समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। 'संस्कृत' का शाब्दिक अर्थ है परिपूर्ण भाषा। संस्कृत पूर्णतया वैज्ञानिक तथा सक्षम भाषा है। संस्कृत भाषा के व्याकरण में विश्वभर के भाषा विशेषज्ञों का ध्यानाकर्षण किया है। उसके व्याकरण को देखकर ही अन्य भाषाओं के व्याकरण विकसित हुए हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह भाषा कम्प्यूटर के उपयोग के लिए सर्वोत्तम भाषा है, लेकिन इस भाषा को वे कभी भी कम्प्यूटर की भाषा नहीं बनने देंगे।

कहते हैं कि किसी देश की जाति, संस्कृति, धर्म और इतिहास को नष्ट करना है तो उसकी भाषा को सबसे पहले नष्ट किया जाए। मात्र 3,000 वर्ष पूर्व तक भारत में संस्कृत बोली जाती थी तभी तो ईसा से 500 वर्ष पूर्व पाणिनी ने दुनिया का पहला व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जो संस्कृत का था। इसका नाम 'अष्टाध्यायी' है।

1100 ईसवीं तक संस्कृत समस्त भारत की राजभाषा के रूप से जोड़ने की प्रमुख कड़ी थी। अरबों और अंग्रेजों ने सबसे पहले ही इसी भाषा को खत्म किया और भारत पर अरबी और रोमन लिपि और भाषा को लादा गया। भारत की कई भाषाओं की लिपि देवनागरी थी लेकिन उसे बदलकर अरबी कर दिया गया, तो कुछ को नष्ट ही कर दिया गया। वर्तमान में हिन्दी की लिपि को रोमन में बदलने का छद्म कार्य शुरू हो चला है।

यदि संस्कृत व्यापक पैमाने पर नहीं बोली जाती तो व्याकरण लिखने की आवश्यकता ही नहीं होती। भारत में आज जितनी भी भाषाएं बोली जाती हैं वे सभी संस्कृत से जन्मी हैं जिनका इतिहास मात्र 1500 से 2000 वर्ष पुराना है। उन सभी से पहले संस्कृत, प्राकृत, पाली, अर्धमागधि आदि भाषाओं का प्रचलन था।

आदिकाल में भाषा नहीं थी, ध्वनि संकेत थे। ध्वनि संकेतों से मानव समझता था कि कोई व्यक्ति क्या



कहना चाहता है। फिर चित्रलिपियों का प्रयोग किया जाने लगा। प्रारंभिक मनुष्यों ने भाषा की रचना अपनी विशेष बौद्धिक प्रतिभा के बल पर नहीं की। उन्होंने अपने-अपने ध्वनि संकेतों को चित्र रूप और फिर विशेष आकृति के रूप देना शुरू किया। इस तरह भाषा का क्रमशः विकास हुआ। इसमें किसी भी प्रकार की बौद्धिक और वैज्ञानिक क्षमता का उपयोग नहीं किया गया।

संस्कृत ऐसी भाषा नहीं है जिसकी रचना की गई हो। इस भाषा की खोज की गई है। भारत में पहली बार उन लोगों ने सोचा-समझा और जाना कि मानव के पास अपनी कोई एक लिपियुक्त और मुकम्मल भाषा होना चाहिए जिसके माध्यम से वह संप्रेषण और विचार-विमर्श ही नहीं कर सके बल्कि जिसका कोई वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार भी हो। ये वे लोग थे, जो हिमालय के आसपास रहते थे।

उन्होंने ऐसी भाषा को बोलना शुरू किया, जो प्रकृतिसम्मत थी। पहली दफे सोच-समझकर किसी भाषा का आविष्कार हुआ था तो वो संस्कृत थी। चूंकि इसका आविष्कार करने वाले देवलोक के देवता थे तो इसे देववाणी कहा जाने लगा। संस्कृत को देवनागरी में लिखा जाता है। देवता लोग हिमालय के उत्तर में रहते थे।

दुनिया की सभी भाषाओं का विकास मानव, पशु-पक्षियों द्वारा शुरुआत में बोले गए ध्वनि संकेतों के आधार पर हुआ अर्थात् लोगों ने भाषाओं का विकास किया और उसे अपने देश और धर्म की भाषा बनाया। लेकिन संस्कृत किसी देश या धर्म की भाषा नहीं यह अपौरूष भाषा है, क्योंकि इसकी उत्पत्ति और विकास ब्रह्मांड की ध्वनियों को सुन-जानकर हुआ। यह आम लोगों द्वारा बोली गई ध्वनियां नहीं हैं।

धरती और ब्रह्मांड में गति सर्वत्र है। चाहे वस्तु स्थिर हो या गतिमान। गति होगी तो ध्वनि निकलेगी।

ध्वनि होगी तो शब्द निकलेगा। देवों और ऋषियों ने उक्त ध्वनियों और शब्दों को पकड़कर उसे लिपि में बांधा और उसके महत्व और प्रभाव को समझा।

संस्कृत विद्वानों के अनुसार सौर परिवार के प्रमुख सूर्य के एक ओर से 9 रश्मियां निकलती हैं और ये चारों ओर से अलग-अलग निकलती हैं। इस तरह कुल 36 रश्मियां हो गईं। इन 36 रश्मियों के ध्वनियों पर संस्कृत के 36 स्वर बने। इस तरह सूर्य की जब 9 रश्मियां पृथ्वी पर आती हैं तो उनकी पृथ्वी के 8 वसुओं से टक्कर होती है। सूर्य की 9 रश्मियां और पृथ्वी के 8 वसुओं के आपस में टकराने से जो 72 प्रकार की ध्वनियां उत्पन्न हुईं, वे संस्कृत के 72 व्यंजन बन गईं। इस प्रकार ब्रह्मांड में निकलने वाली कुल 108 ध्वनियां पर संस्कृत की वर्ण माला आधारित हैं।

ब्रह्मांड की ध्वनियों के रहस्य के बारे में वेदों से ही जानकारी मिलती है। इन ध्वनियों को अंतरिक्ष

वैज्ञानिकों के संगठन नासा और इसरो ने भी माना है।

कहा जाता है कि अरबी भाषा को कंठ से और अंग्रेजी को केवल होंठों से ही बोला जाता है किंतु संस्कृत में वर्णमाला को स्वरों की आवाज के आधार पर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, अंतःस्थ और ऊष्म वर्गों में बांटा गया है।